Vol-1, Issue-2

अहिंसाः एक शाश्वत-कालजयी भावना (गांधी दर्शन के संदर्भ में)

डॉ अनुपाल भारद्वाज

सहायक प्रोफेसर, स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग डीएवी महाविद्यालय अबोहर, पंजाब

शोध-सारांश:

अहिंसा परमो धर्मः' सनातन संस्कृति के सबसे महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक है। हज़ारों वर्षों के इतिहास में न जाने कितनी बार यह देश बना, बिगडा। मानव ने अपने प्रभूत्व के लिए कितना खुन बहाया, अंदाज़ा लगाना मुश्किल है परन्तु अंत में अहिंसा की भावना को अपनाना उसकी आवश्यकता भी है और समय की अपेक्षा है। अहिंसा का सिद्धांत प्रासंगिक है और रहेगा। भारत इस सिद्धांत का जनक है जिसका अनुसरण दुसरे देश करते हैं। अहिंसा का मार्ग अपरिवर्तनीय है। इसके लिए सत्य, विनम्रता, सिहष्णुता, प्रेम,दयालुता को हमें अपनी दिनचर्या में अपनाना होगा। अहिंसा यदि पूरे व्यक्तित्व पर अनुप्राणित होगी तो ही व्यवहार में लायी जा सकती है। हिंसा का विकल्प हिंसा कभी नहीं हो सकती। महात्मा गांधी जीवन पर्यन्त इस पर अडिग रहे। वे आधुनिक समय के अहिंसा के संदेश के सर्वोच्च संदेशवाहक थे। सत्य और अहिंसा के दम पर उन्होंने अंग्रेज़ों से लोहा लिया था। उनके इस सिंद्धांत को न केवल भारत अपितु पूरे विश्व में ख्याति प्राप्त की विश्व के अनेक नेताओं ने उनके अहिंसा के सिद्धांत को अपनाया। उनके योगदान को स्वीकार करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ(यू. एन. ओ.) ने 2, अक्तूबर 2008 से इस दिन को 'अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' के रूप में मान्यता प्रदान की। विचार भले ही दशकों पुराने हैं परन्तु अहिंसा की आवश्यकता आज भी उतनी ही है जितनी पहले थी, बल्कि उससे भी अधिक है। इस समय देश में हिंसा का जो दौर चल रहा है, वह आगे चल कर क्या रूप ग्रहण करेगा, किस दिशा की तरफ जाएगा सोचकर ही सिहरन पैदा होती है। महात्मा गांधी का कालजयी अहिंसा-दर्शन मानव को, देश को, विश्व को दिशा देने का काम कर सकता है। ऐसा पूर्ण विश्वास है।

बीज शब्द :

अहिंसा, हिंसा, महात्मा गांधी, सत्य, त्याग, आत्मबल, आत्मा, मानवता, समाज, देश, विश्व, कालजयी भावना, वीर, धर्म, सिद्धांत, आतंक, विचार

'अहिंसा परमो धर्मः' सनातन संस्कृति के सबसे महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक है। हज़ारों वर्षों के इतिहास में न जाने कितनी बार यह देश बना, बिगड़ा। मानव ने अपने प्रभुत्व के लिए कितना खून बहाया, अंदाज़ा लगाना मुश्किल है परन्तु अंत में अहिंसा की भावना को अपनाना उसकी आवश्यकता भी है और समय की अपेक्षा है। अहिंसा का सिद्धांत प्रासंगिक है और रहेगा। भारत इस सिद्धांत का जनक है जिसका अनुसरण दूसरे देश करते हैं। डार्विन का सिद्धांत जंगल में तो लागू हो सकता है परन्तु सभ्य-मानवीय समाज में इसका क्रियान्वित होना मानवीय भावनाओं के पतन का द्योतक है। महात्मा गांधी आधुनिक विश्व इतिहास के सबसे बड़े नायकों में से एक रहे हैं जिन्होंने अपने सिद्धांतों से, कार्यों से न केवल भारत वरन् विश्व का मार्गदर्शन किया है। चाहे मार्टिन लूथर किंग हों, चाहे नेल्सन मंडेला या फिर अब्दुल गफ़्फार खान हों, भूतपूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा हों। गांधी इनके आदर्श रहे हैं।

पूर्वोत्तर प्रभा वर्ष-1, अंक-2 जुलाई-दिसंबर 2021

महात्मा गांधी ने जीवन भर अहिंसा को सबसे अधिक महत्त्व दिया। इसकी जड़ें वे सनातन धर्म से जोड़ते हैं। उनके शब्दों में- "अहिंसा उसी प्रकार से मानवों का नियम है जिस प्रकार से हिंसा पशुओं का नियम है। पशु की आत्मा सुप्तावस्था में होती है और वह केवल शारीरिक शक्ति के नियम को ही जानता है। मानव की गरिमा एक उच्चतर नियम आत्मा के बल का नियम- के पालन की अपेक्षा करती है...... जिन ऋषियों ने हिंसा के बीच अहिंसा की खोज की, वे

न्यूटन से अधिक प्रतिभाशाली थे। वे स्वयं वेलिंग्टन से भी बड़े योद्धा थे। शस्त्रों के प्रयोग का ज्ञान होने पर भी उन्होंने उसकी व्यर्थता को पहचाना और श्रांत संसार को बताया कि उसकी मुक्ति हिंसा में नहीं अपितु अहिंसा में है।

इतिहास अशोक को एक योद्धा से अधिक एक शांतिप्रिय, अहिंसावादी राजा के रूप में अधिक जानता है। जिसके द्वारा कलिंग की लड़ाई के पश्चात् बौद्ध धर्म अपनाए जाने पर अहिंसा का रास्ता ग्रहण करने के बाद मानवता की भलाई के लिए किए गए

कार्यों की चर्चा रहती दुनिया तक की जाएगी। बुद्ध के उपदेशों में भी अहिंसा का तत्त्व सर्वोपिर है। जिस कारण गांधी बौद्ध धर्म के सबसे बड़े प्रशंसकों में से एक हैं। उनके शब्दों में-".....अपने भारी बलिदान, महान त्याग और जीवन की निर्दोष शुचिता से बुद्ध ने हिंदू धर्म पर अमिट छाप छोड़ी है। जिसके लिए हिंदू धर्म इस महान उपदेशक का सदा ऋणी रहेगा..........।2

रोमां रोला ने गांधी के विचारों को शब्दबद्ध करते हुए लिखा है-" हमारे संग्राम का लक्ष्य है समस्त संसार के साथ मैत्री की स्थापना। अहिंसा मनुष्य के पास बनी रहने के लिए आई है। उसने विश्व-शांति की घोषणा की है........ हिंसावादी राजनीतिज्ञ इस विश्वास का उपहास करेंगे और ऐसा करके अहरे सत्य के प्रति वे अपना अज्ञान ही प्रकट करेंगे...... सच्चे विश्वास की विशिष्टता यह है कि वह संसार के विरोधी-भाव का अस्तित्व अस्वीकार नहीं करता......शांति का मार्ग दुर्बलता के मार्ग से भिन्न है...... जिनको विश्वास नहीं या जो डरते हैं, वे लौट जाएं। शांति का मार्ग आत्मत्याग है। अहिंसा के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए महात्मा गांधी लिखते हैं--" अहिंसा मानव जाति का नियम

है, यह उनके लिए नहीं है जिन्हें ईश्वर में आस्था नहीं है। अहिंसा और सत्य का मार्ग तलवार की धार के समान तीक्ष्ण है। इसका अनुसरण हमारे दैनिक भोजन से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। सही ढंग से लिया जाए तो भोजन देह की रक्षा करता है और अहिंसा आत्मा की रक्षा करती है। शरीर के लिए भोजन नपी तुली मात्रा में और निश्चित् अंतरालों पर ही लिया जा सकता है। अहिंसा तो आत्मा का भोजन है, निरंतर लेना पड़ता है।

अहिंसा का मार्ग अपरिवर्तनीय है। इसके लिए सत्य,





उस तत्त्व को पूरी तरह नहीं पकड़ सकता। वह उसके संपूर्ण तेज को सहन नहीं कर पाएगा किंतु उसका अत्यल्प भी हमारे अंदर सक्रिय हो जाए तो उसके अद्भुत परिणाम निकल सकते हैं।5

महात्मा गांधी को पूर्ण विश्वास था कि 'हिंसा' का विकल्प 'हिंसा' कभी नहीं हो सकती। देखा जाए तो इस समय इसका प्रमाण पूरी दुनिया में देखने को मिल रहा है। इराक, सीरिया, अफ़्गानिस्तान, फलस्तीन, अरब देश, नाईजीरिया, सोमालिया आदि न जाने कितने उदाहरण दिए जा सकते हैं। जहां आतंक, क्रूरता का शासन है। मानव जाति ने दो विश्वयुद्धों में विनाश को भोगा है परंतु उसके भीषण परिणाम आने वाले समय को देखने को मिलेंगे। प्रभाकर श्रोत्रिय के शब्दों में--" अहिंसा का दर्शन तो किसी सीमा तक हिंसा का नियंत्रण करने का साहस दे सकता है परंतु हिंसा का दर्शन हिंसा नियंत्रित नहीं कर सकता क्योंकि वही उसका स्रोत है। 6 कुछ ऐसा ही महर्षि पतंजिल भी कहते हैं-- "अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सित्रधौ वैरत्यागः" जब अहिंसा धर्मिनिश्चयव्यवहार में दृढ़, हो जाती है, तब उस पुरुष के मन से वैरभाव छूट जाता है किंतु उसके सामने या संग से अन्य पुरुष का भी वैरभाव

पूर्वीत्तर प्रभा

वर्ष-1, अंक-2

जुलाई-दिसंबर 2021

छूट जाता है। हिंसा का विकल्प हिंसा कभी नहीं हो सकती। महात्मा गांधी जीवन पर्यन्त इस पर अडिग रहे। वे आधुनिक समय के अहिंसा के संदेश के सर्वोच्च संदेशवाहक थे। सत्य और अहिंसा के दम पर उन्होंने अंग्रेज़ों से लोहा लिया था। उनके इस सिंद्धांत को न केवल भारत अपितु पूरे विश्व में ख्याति प्राप्त की विश्व के अनेक नेताओं ने उनके अहिंसा के सिद्धांत को अपनाया। उनके योगदान को स्वीकार करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ(यू. एन.

ओ.) ने 2, अक्तूबर 2008 से इस दिन को 'अंतराष्ट्रीय अहिंसा दिवस' के रूप में मान्यता प्रदान की। और लोगों के लिए अहिंसा कायरता की निशानी हो सकती है परंतु गांधी अहिंसा को वीरता की पहली कसौटी मानते हैं। एक स्थान पर वे कहते हैं-----" अहिंसा तो वीरता की चरम सीमा है। अहिंसा कायरता की आड नहीं है बल्कि यह वीर का सर्वोच्च गुण है...... अहिंसा मनुष्य की प्रतिशोध लेने की भावना का सचेतन और जाना-बुझा संयमन है..... अहिंसा का मार्ग हिंसा के मार्ग की तुलना में कहीं ज्यादा साहस की



अपेक्षा रखता है। कायरता पालना मेरी प्रकृति के विरुद्ध है। दिक्षण अफ्रीका से लौटने के बाद से, जहां लोग हज़ारों ज़बरदस्त बाधाओं के विरुद्ध उठ खड़े हुए थे और नाकामयाब नहीं रहे थे। मैंने सच्ची वीरताजो अहिंसा ही है, का प्रचार करना अपना जीवन-ध्येय बना लिया है। यही भावना गांधी ने उस समय जब उन्हें रेलगाड़ी से केवल इसलिए उतार दिया था क्योंकि वे गोरे अंग्रेज़ नहीं थे, काली चमड़ी वाले भारतीय थे। उन्होंने इस अपमान का बदला लेने का निश्चय किया। उसी प्रतिशोध का पल्लवन पुष्पन उनके मन में होता रहा तथा जिसने दूरगामी परिणाम दिए। अपने आत्मबल से, दृढ़निश्चय से, सत्यिनिष्ठा से, अहिंसा का मार्ग अपनाकर स्वतंत्रता आंदोलन को जनआंदोलन बना कर स्वातंत्र्य का पथ प्रशस्त किया। अहिंसा का प्रभाव मनुष्य पर कैसा पड़ता है। इसका बड़ा रोचक वर्णन महात्मा गांधी ने दिया है----"अहिंसा रेडियम की तरह काम करती है।

सांघातिक अंगवृद्धि में स्थापित रेडियम की अतिसूक्ष्म मात्रा निरंतर चुपचाप तब तक काम करती रहती है जब तक कि रोगग्रस्त ऊतक के समूचे पिंड को स्वस्थ ऊतक में नहीं बदल देती। इसी प्रकार थोड़ी सी सच्ची अहिंसा चुपचाप, सूक्ष्म और अदृश्य रूप से काम करती है और समूचे समाज का कायाकल्प कर देती है। अहिंसा एक विज्ञान है, विज्ञान के शब्दकोश में 'असफलता' का कोई स्थान नहीं होता। अपेक्षित परिणाम को

> प्राप्त करने की असफलता प्रायः नयी खोजों की पूर्वगामी सिद्ध होती है। अहिंसा की प्रकृति भी कुछ ऐसी ही है। हर क्षण वह नया पक्ष प्रयोगकत्रा के समक्ष रखती है और इसकी परख हिंसा के माहौल में ही की जा सकती है।

> गांधी हमेशा इस बात के समर्थक रहे हैं कि 'पाप से घृणा करो, पापी से नहीं', क्योंकि यदि वे आचरण की अपेक्षा आचरणकत्रा को समाप्त करना चाहते हैं तो फिर उनमें और आचरणकत्रा में कोई अंतर नहीं। उसका हिंसक भाव तो वे स्वयं

ग्रहण कर गए तो फिर बुराई की जड़ समाप्त नहीं हीं नहीं हो पाई। अहिंसा बुरे को नहीं बुराई को समाप्त करने में विश्वास नहीं रखती है। एक स्थान पर गांधी कहते हैं--" अहिंसा की कसौटी यह है कि अहिंसक संघर्ष में कोई विद्वेष बाकी नहीं रहता और अंत में शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। दक्षिण अफ्रीका में जनरल स्मट्स के साथ मेरा यही अनुभव रहा। वह शुरु में मेरा कट्टर विरोधी और आलोचक था। आज वह मेरा परम स्नेही मित्र है।

अहिंसा का मुख्य निहितार्थ यह है कि हमारी अहिंसा हमारे प्रति विरोधी के रुख को नरम बनाए, कठोर नहीं,वह उसे द्रवित कर दे। महात्मा गांधी अहिंसा को साधन मानते हैं, साध्य नहीं। प्रश्न यही है कि फिर साध्य क्या हुआ? साध्य है- सत्य की खोज। सत्य क्या है-- मानवीय कल्याण। उनके अनुसार--" अहिंसा के बिना सत्य पर शोध और उसकी प्राप्ति असंभव है। अहिंसा और सत्य एक-दूसरे से इस प्रकार गुंथे हुए हैं कि उन्हें

पूर्वीत्तर प्रभा

वर्ष-1. अंक-2

जुलाई-दिसंबर 2021

अलग नहीं किया जा सकता........... अहिंसा साधन है और सत्य साध्य है। यदि हम साधन को ठीक रखें तो देर सवेर-सवेर साध्य तक पहुंच ही जाएंगे।"¹⁰

जिस शांति को प्राप्त करने में मानव समाज युगों से तरस रहा है। उसका रास्ता तो अहिंसा से होकर ही जाता है। इसे सामाजिक आचरण का नियम बनाना चाहिए। यह केवल एक मानव तक सीमित आत्यंतिक गुण नहीं है। परमाणु बमों के ढेर पर बैठ कर अहिंसा की बात करना हास्यास्पद है यदि समस्त विश्व शांति चाहता है तो उसे सबसे बड़े शस्त्र (अहिंसा) को अपनाना ही होगा। आज अहिंसा का यह आचरण लुप्त हो गया है। यह ज़रूरी है कि हम क्रोध का ज़वाब प्रेम से और हिंसा का ज़वाब अहिंसा से देने के शाश्वत नियम को फिर से जीवित करें। आज केवल गांधी की तस्वीर पर माला चढ़ाना ही अपने कत्तव्यों की इतिश्री मान लिया गया है।

जब तक अहिंसा का भाव आत्मसात नहीं किया जाता तब तक राष्ट्रपिता केवल एक उपाधि होगी, भावना या सम्मान नहीं। महात्मा गांधी के अनुसार---" दुनिया रक्तपात से बुरी तरह तंग आ चुकी है। वह मुक्ति का मार्ग चाहती है और मैं यह सोचकर खुश हो लेता हूं कि इस क्षुधित संसार को मुक्ति का मार्ग दिखाने का श्रेय शायद भारत की प्राचीन भूमि को ही मिले....... यदि भारत सत्य और अहिंसा के माध्यम से अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेता है तो विश्व जिस शांति का भूखा है, उसमें उसका योगदान काफी महत्त्वपूर्ण होगा..... यह भारत की सर्वोच्च महिमा और विश्व की प्रगति के लिए उसकी अमूल्य देन होगी।11

उपर्यक्त विचार भले ही दशकों पुराने हैं परन्तु अहिंसा की आवश्यकता आज भी उतनी ही है जितनी पहले थी, बल्कि उससे भी अधिक है। कोई उन्मादी मस्तिष्क किस समय मानवीय सभ्यता को कब परमाणु शक्ति से खण्ड-खण्ड कर दे, कहा नहीं जा सकता? दुनिया बारूद के ढेर पर खड़ी है। आज का समाज वैश्वीकरण का है। सुख-सुविधाओं, साधनों ने मानव जीवन को सुगम तो बनाया है परन्तु सोशल मीडिया से जुड़ा व्यक्ति कितना सोशल है?, बताने की आवश्यकता नहीं। एकांतिक, काल्पनिक(वर्चुअल) दुनिया ने मानवीय संबंधों की नींव को खोखला कर दिया है। इस समय देश में हिंसा का जो दौर चल रहा है, वह आगे चल कर क्या रूप ग्रहण करेगा, किस दिशा की तरफ जाएगा सोचकर ही सिहरन पैदा होती है। मनुष्य को अभी बहुत लंबा सफर तय करना है। हिंसा केवल विनाश् की ओर ही ले जाएगी। समाधान की ओर नहीं। महात्मा गांधी का कालजयी अहिंसा-दर्शन मानव को, देश को, विश्व को दिशा देने का काम कर सकता है। ऐसा पूर्ण विश्वास है।

संदर्भ:

- 1. शास्त्री, विष्णुकांत संपा., महात्मा गांधीः अहिंसा का बल (दिल्लीःगुरुकुल विद्यापीठ प्रकाशन, 2011), पृ. 162-63
- 2. वही, पृ. 139.
- 3. रोलां, रोमां, महात्मा गांधी, संजीव योगी- संपा.(दिल्ली:होली लाईट पब्लिकेशन, 2012), पृ. 104-105.
- 4. शास्त्री, विष्णुकांत, संपा., महात्मा गांधीः अहिंसा का बल(दिल्लीःगुरुकुल विद्यापीठ प्रकाशन, 2011), पृ. 165
- 5. वही, पृ. 166.
- 6. श्रोत्रिय, प्रभाकर, हिंद स्वराजःहर दिन युगारंभ (गाजियाबाद:एस.एस. पब्लिशर्स, 2012), पृ. 115
- 7. वही, पृ. 172-73
- 8. वही, पृ. 176.
- 9. वही, पृ. 180.
- 10. वही, पृ. 170-71.
- 11. वही, पृ. 226

अहिंसा परम धर्म है, अहिंसा परम संयम है, अहिंसा परम दान है तथा अहिंसा परम यज्ञ है, अहिंसा परम फल है, अहिंसा परम मित्र है और अहिंसा परम सुख है. -वेदव्यास -www.Desthindiquotes.com